

Vol 4 Issue 6 Dec 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinte, Spiru Haret University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Anurag Misra DBS College, Kanpur	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, Iasi	More
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania		

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India Ex - VC. Solapur University, Solapur	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yalikal Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org



जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन

पवन सारस्वत¹, पी.एस. त्यागी²

¹शोधार्थी, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा.

²एसोसिएट प्रोफेसर, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा.

सारांश : अध्ययन का उद्देश्य जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन करना था। अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर स्वामी जी के उपदेशों एवं वचनों पर आधारित ग्रन्थों को प्रमुख आधार बनाया गया। अध्ययन हेतु ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में जैन दर्शन का शिक्षा-दर्शन किसी बाल-विशेष, वर्ग-विशेष के लिये न होकर सार्वकालिक, सार्वदेशिक है। अर्थात् जैन दर्शन का शिक्षा-दर्शन सब को पुरुषार्थ और आत्मनिर्भरता की पवित्र शिक्षा देता हुआ समझाता है कि तुमने दुसरे के साथ न्याय तथा उचित व्यवहार किया तो इस पुण्याचरण से तुम्हें विशेष शान्ति तथा आनन्द प्राप्त होगा। दुसरे शब्दों में जैन शिक्षा-दर्शन में, शिक्षा का स्वरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रशासन एवं अनुशासन मानवाधिकार एवं विश्व शान्ति शिक्षा को सही आधार प्रदान कर सकता है।

प्रस्तावना:-

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में उन समन्वित गुणों का विकास करना है जिनके द्वारा वह स्वयं प्रसन्न रह सके और समाज के विकास में अपनी क्षमता के अनुसार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। शिक्षा ही मानव को सही अर्थों में मानव कहलाने योग्य बनाती है। शिक्षा संकुचित अर्थ में एक व्यवस्था है, किन्तु उसका फल व्यापक अर्थों में विद्या है इसलिए भारतीय विचारकों ने विद्या को मोक्षदायिनी और अविद्या को समस्त दुःखों का कारण स्वीकार किया है। विद्या या ज्ञान मोक्ष का साधन ही नहीं वरन् स्वयं मुक्तावस्था है, यदि सही अर्थ में शिक्षा की इस अवधारणा को ग्रहण करके उस को व्यवहार में लाने का प्रयास किया गया होता और शिक्षा की व्यवस्था इसके अनुरूप की गई होती तो व्यक्ति और समाज की यह दुर्गति न होती जैसी कि आज देखने को मिल रही है। सारा विश्व स्वार्थपरता, परस्पर विद्वेष और घृणा के भाव से आहत है। हमने विश्वशान्ति एवं मानव मूल्यों को तिलांजलि दे दी है। स्वार्थपूर्ति के लिए दूसरे का सर्वनाश करने में किसी हद तक जाने को तैयार हैं। अपने आदर्शों एवं मूल्यों को भूलकर सारा विश्व शान्ति एवं मानवाधिकार के हनन के लिए तत्पर आज जिस गति से मानव जैसे जीवन प्राणी की मूल्यों से आस्था समाप्त हो रही है, उससे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कुछ ही वर्षों में मानव का मूल्यों एवं शान्ति से विश्वास उठ जाएगा तो समाज में शान्ति एवं संस्कृति की स्थिति क्या होगी? आज भौतिक संसाधनों को जुटाने में अन्दर की मानवीयता कुंठित हो रही है। मानव दिखावा कर गौरवान्वित हो रहा है। विषयभोगी मानव में अहंकारिता अहमवादिता व स्वार्थपरता छा गई है। मानव मन भ्रमित है। सामाजिक जीवन की समरसता का भविष्य अंधकारमय प्रतीत हो रहा है। ऐसी स्थिति में सुखद एवं शान्तिमय भविष्य को सुनिश्चित करने हेतु अतीत की नीतिगत कथाओं का अध्ययन करना अपरिहार्य है, जिसमें शिक्षा द्वारा नैतिक निर्णय क्षमता एवं विश्वशान्ति के प्रति प्रतिबद्धता का विकास तथा संस्कृति विहीनता, अमानवीयता एवं अलगाव से मानव जीवन के संरक्षण को बल मिले।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सहायनीय प्रगति हुई है, परन्तु क्या इस प्रगति का लाभ समाज के विभिन्न वर्गों को मिला है? क्या अनुसूचित जाति, जनजाति पिछड़े वर्ग एवं महिला वर्ग का उत्थान हुआ है? क्या शिक्षा वर्तमान में सामाजिक समरसता ला सकती है? ये सभी प्रश्न आज सुरसा की तरह मुँह फैलाए हर विचारक, सुधारक एवं शिक्षाविद् के सामने खड़े हैं। मानव का विभिन्न स्तरों पर शोषण मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति पर कुठाराघात है। अतः आज परिस्थिति के अनुकूल सुरक्षा की आवश्यकता है। एतदर्थ भारतीय दर्शन में जैन दर्शन के सिद्धान्तों का अनुसरण करना समीचीन प्रतीत होता है। यही शिक्षा मूलतः मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति जैसे बिन्दुओं के उद्गम स्थल है। इसी कारण शोधार्थी ने आज के इन ज्वलंत मुद्दों के समाधान हेतु जैन दर्शन का चयन किया है। विश्वशान्ति एवं मानवाधिकार सुरक्षा दोनों विषय आज के विश्व पटल पर समस्या बने हुए हैं। आज इन बिन्दुओं पर शोध किया जाना समीचीन प्रतीत होता है।

समस्या कथन:-

शोधकर्ता द्वारा अपने शोधकार्य हेतु “जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन” विषय चुना गया।

अध्ययन के उद्देश्य :-

- 1.जैन दर्शन के शैक्षिक स्वरूप की विवेचना करना।
- 2.मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना की विवेचना करना।
- 3.जैन दर्शन की शिक्षा में निहित मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा के तत्त्वों का परिगणन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण करना।
- 4.जैन दर्शन की शिक्षा में निहित मानव अधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता का विवेचन करना।

अध्ययन के स्रोत :-

प्रस्तुत शोधाध्ययन के परिप्रेक्ष्य में भगवान महावीर स्वामी जी के उपदेशों एवं वचनों पर आधारित ग्रन्थों को प्रमुख आधार बनाया गया है किन्तु भगवान महावीर स्वामी जी ने उपदेश ही दिया, उन्होंने कोई ग्रन्थ नहीं रचा। इसी कारण वे निग्रन्थ कहे जाते हैं। बाद में उनके प्रमुख शिष्यों ने उनके उपदेशों और वचनों का संग्रह कर लिया। इनका मूल साहित्य प्राकृत में है। विशेष रूप से मगधी, पाली एवं अपभ्रंश में होने के कारण सर्व सेवा संघ—प्रकाशन राजघाट, वाराणसी द्वारा प्रकाशित एवं जिनेन्द्रवर्णी (2007) द्वारा संपादित समणसुत्त को प्रमुख आधार एवं स्रोत सामग्री के रूप में चयनित किया गया है।

अध्ययन विधि:-

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शैक्षिक अनुसंधान की दार्शनिक ऐतिहासिक शोध विधि को अपनाया गया है।

शोध अध्ययन प्रक्रिया :-

प्रस्तुत अध्ययन कर प्रक्रिया को चार चरणों में विभक्त किया गया है :-

- 1.जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा सम्बन्धित गाथाओं एवं श्लोकों का चयन
- 2.जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा सम्बन्धित गाथाओं एवं श्लोकों का वर्गीकरण
- 3.वर्गीकृत गाथाओं एवं श्लोकों का विश्लेषण एवं विवेचन
- 4.जैन दर्शन में निहित मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा सम्बन्धी गाथाओं एवं श्लोकों में निहित तत्त्वों का शैक्षिक निहितार्थ निर्धारण

शोध अध्ययन की उपलब्धियाँ :-

शोधार्थी ने अवलोकन एवं अध्ययन द्वारा यह पाया है कि वर्तमान भारतीय समाज संघर्ष के संकटकालीन दौर से गुजर रहा है। जैन दर्शन ऐसी ही संकटकालीन स्थितियों से मानव मात्र को उबारने के लिये एक उपदेष्टा के रूप में प्रकट होती है।

मानवाधिकार एवं जैन दर्शन:-

मानवाधिकार का वर्णन जैन दर्शन के ग्रन्थ समणसुत्त में प्रथम खण्ड के उन्तालीसवें श्लोक से आरम्भ हो जाता है। सम्पूर्ण समणसुत्त में मानवाधिकार के प्रति मानव मूल्य, अहतां और शोषण का विरोध किया गया है। जैन धर्म के सिद्धान्त मानवाधिकार व मानव जीवन के आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए वे संजीवनी का कार्य कर सकते हैं, व शर्त की हम उनका उचित ढंग से पालन करें।

महावीर संदेश आभा से परिपूर्ण है तथा आत्मविश्वास आत्मानुशासन एवं आत्म विशुद्धि द्वारा आत्मा की आंतरिक शक्तियों एवं असीम संभावनाओं को उजागर करने के साधन हैं। इनको पालन करने से ही मानवाधिकार हनन पर स्वतः रोक लगेगी।

विश्वशान्ति शिक्षा एवं जैन दर्शन:-

अपरिग्रह का मार्ग विश्वशान्ति का प्रशस्त मार्ग है। इसके फलस्वरूप मानव को व्यवहारिक एवं सामाजिक जीवन में सफलता और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। साथ ही साथ अहिंसा और जीवदया की भावना भी सामने आती है। जैन दर्शन का प्रत्येक सिद्धान्त, प्रत्येक वाक्य प्राणी हित की बात करता है। समणसुत्त के प्रथम खण्ड में एक सौ इक्यावन (151) के श्लोक में व्यक्त किया है।

“परस्परप्रेमग्रहो जीवानाम्” अर्थात् जीवन एक दूसरे के सहयोग पर एक दूसरे के उपकार भाव पर निर्भर है। यहाँ “जीओ और जीने दो” की भावना तथा क्षमा की भावना विद्यमान है। यही सह—अस्तित्व है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जैन दर्शन सबको पुरुषार्थ और आत्मनिर्भरता की पवित्र शिक्षा देता हुआ समझाता है कि यदि तुमने दूसरों के साथ न्याय तथा उचित व्यवहार किया तो इस पुण्याचरण से तुम्हें विशेष शान्ति तथा आनन्द प्राप्त होगा। अतः जैन दर्शन के अनुसार बालक को शिक्षा के माध्यम से सदाचारता, संयम, तप, स्वाध्याय, सदाचरण, अहिंसा सत्य, त्याग, शान्ति, अस्तेय आदि गुणों के विकास की ओर उन्मुख करना चाहिये। विश्वशान्ति शिक्षा एवं मानवाधिकार के सन्दर्भ में इस आत्मनिर्भरता की शिक्षा का प्रचार होना आवश्यक भी है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया :—

शिक्षण आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, इस अर्थ में बालक तथा उसके वातावरण के मध्य निरन्तर अन्तःक्रिया चलती रहती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत मुख्यतः तीन बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है जो निम्नलिखित हैं —

- शिक्षा का पाठ्यक्रम
- शिक्षण विधि

शिक्षा का पाठ्यक्रम :—

जैन दर्शन के पाठ्यक्रम में वनस्पति, शारीरिक संरचना इतिहास, सामाजिक परिवर्तन, भौतिक परिवर्तन आदि का समावेश किया गया है।

शिक्षण विधि:—

जैन दर्शन की प्रमुख शिक्षण विधियों में (1) निसर्ग विधि, (2) अधिगम विधि, (3) निक्षेप विधि, (4) प्रमाण विधि, (5) नयविधि, (6) स्वाध्याय विधि, (7) प्रश्नोत्तर विधि, (8) पाठ विधि, (9) श्रवण विधि, (10) पद विधि, (11) पदार्थ विधि, (12) उपक्रम विधि, (13) व्याख्या विधि, (14) शास्त्रार्थ विधि, (15) प्ररूपणा विधि, (16) कथा, रूपक, तुलना एवं उदाहरण विधि तथा (17) संगोष्ठी विधि प्रमुख हैं।

प्रशासन तथा अनुशासन :—

शिक्षा का अर्थ, स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यक्रम शिक्षण विधियाँ इत्यादि निर्धारित कर लेने के पश्चात् शिक्षा व्यवस्था का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष सम्पूर्ण शिक्षा योजना को कार्य रूप में परिणत करने की योजना है। इस उपशीर्षक पर विचार किया जाना अनिवार्य है।

- गुरु शिष्य सम्बन्ध
- अनुशासन का स्वरूप

गुरु शिष्य सम्बन्ध :—

गुरु एवं शिष्य के सुमधुर सम्बन्ध एक—दूसरे के विकास के साथ ज्ञान को भी विकसित करने में सहायक होते हैं। जैन दर्शन में विनय और गुरु भक्ति पर बल दिया गया है।

अनुशासन का स्वरूप :—

अनुशासन के दृष्टिकोण से जैन दर्शन में कठोर रूख अपनाया हुआ है। इस दर्शन में अनुशासन के कठोर प्रारूप का प्रवाधान है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में कहा जाता है कि जैन दर्शन का शिक्षा—दर्शन किसी बाल— विशेष वर्ग—विशेष के लिये न होकर सार्वकालिक, सार्वदेशिक है। अर्थात् जैन दर्शन का शिक्षा—दर्शन सब को पुरुषार्थ और आत्मनिर्भरता की पवित्र शिक्षा देता हुआ समझाता है कि तुमने दूसरों के साथ न्याय तथा उचित व्यवहार किया तो इस पुण्याचरण से तुम्हें विशेष शान्ति तथा आनन्द प्राप्त

होगा । दुसरे शब्दो मे जैन शिक्षा—दर्शन मे, शिक्षा का स्वरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रशासन एवं अनुशासन मानवाधिकार एवं विश्व शान्ति शिक्षा को सही आधार प्रदान कर सकता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.बेस्ट, जे. डब्ल्यू (1963), रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली ।
2.बुच, एम. बी., ए. फिपथ सर्वे ऑफ एजुकेशन रिसर्च (1983), बडौदा ।
3.बेस्ट, जे. डब्ल्यू (1988), रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली विले ईस्टर्न प्रा. लि. ।
4.डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, भारतीय दर्शन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली (1989) ।
5.मिश्र, डॉ. करुणा शंकर, मूल्य शिक्षण (1991) विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा ।
6.ओड़, एल. के (1994) 'शिक्षा की दार्शनिक प्रष्टभूमि' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ।
7.डॉ. मोहन लाल मेहता (1996). जैन धर्म दर्शन (एक समीक्षात्मक परिचय), सेठ मूथा छगनमल मेमोरियल फाउण्डेशन, बैंगलोर ।
8.बुच, एम. बी. (1998). फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्चेज इन एजुकेशन, वॉल्यूम –2, 2 / 20 नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. ।

10.आचार्य, उमा स्वाती (1998). 'तत्त्वार्थ सूत्र' जैन स्टडी सक्रिल, मुम्बई ।
11.युवाचार्य (2000). 'जैन धर्म' अर्हत और अर्हताऐँ" जैन स्टडी सर्किल मुम्बई ।
12.Begum S.M. (2000). Human Right in India Issue and perspectives New Delhi & Publishing Corporation.

14.राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग रिपोर्ट (2001) ।
15.पाण्डेय, रामशक्ल (2001). 'नई शिक्षा नीति' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
16.पाठक एवं त्यागी, (2002). 'शिक्षा के सिद्धान्त' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
17.चौपड़ा, पी. एन. (2002). भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास' दी मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली ।
18.सखाराम दोशी (2003). भगवती आराधना सूत्र, भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण, शोलापुर, महाराष्ट्र ।
19.National Human Right Commission Report 2004
20.सिंह, आदित्य नारायण (2004). मानव अधिकार स्रोत ग्रन्थ, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली
21.ऊमा स्वाती विवेचक पं. सुत्रालाल संघवी (2005). तत्त्वार्थ सूत्र, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी ।
22.सारस्वत, अक्षेन्द्र नाथ (2006). "सामाजिक न्याय मानवाधिकार और पुलिस", राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
23.कबीर हुमायूँ (2007). भारतीय शिक्षा दर्शन, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली
24.श्री कृष्ण दत्त भट्ट (2007), जैन धर्म क्या कहता है ? सर्वसेवा संघ, वाराणसी ।
25.सक्सेना, एन. आर. स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त (2007) आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
26.शर्मा, आर. ए. (2008). मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो मेरठ ।



पवन सारस्वत
शोधार्थी , दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा.

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org